Rati Saxena'spoem _2

जाने से पहले

जाने से पहले

बन्द करने होंगे

सभी दरवाजे , एक एक कर के

हर दरवाजे की चरमराहट को सुनना होगा

हौले सिर सहलाना होगा

लेकिन कभी भूल कर भी नहीं करना

वायदा, फिर कभी लौटने का

दरवाजे पर छोड़ देना है

कि वह तुम्हारे बाद किसके लिए खुलेगा

जाने से पहले

मिटाने होंगे पदचि्ह्न

और हाथों के निशान, जिन्हे

शायद किसी की जरूरत ना पड़े

जाने से पहले गठरी में बाँध कर रख देनी हैं

सभी किस्से , जिनमें जंग लगी हो

और मेज पर सजा देने हैं

वे खिलखिलाहटें ,

जाने से पहले पढ़ लेनी है सब किताबें

और निकाल फैंकने हैं वे सूखे फूल

जो तुमने अपने को याद दिलाने के लिए रखे हैं

जाने से पहले मिटानी होंगी सारी लकीरें

खोल देने होंगे सारी गाँठें

और फिर जम कर मुस्कुराना होगा कि

जिन्दगी होंठोंके कोनो पर आ बैठे

जाने से पहले बन्द करों बस एक दरवाजा

सब अपने आप बन्द हो जाएंगे

Before leaving

close all the doors, one

by one,

hear them shut with a click,

pat each knob farewell,

and try never to promise to return,

not even by mistake,

don’t fret over who next

might pass through; each door

itself decides this

before leaving wipe away

each footprint

and fingerprint, no longer

needed by anyone,

before leaving, pack your things,

bundle every rusted story

and decorate the table with memories of laughter

before leaving, check every book,

throwing out the pressed flowers

dried in their pages

before leaving erase every line, break

open all the knots

and smile with strength

until life comes to sit

in the corners of your mouth

before leaving, close the final door,

and the rest will close themselves

(Translated by Seth Michelson)

Rati Saxena is a poet, editor, translator, and writer of several books almost 30 in number including translation work, She is Festival Director of the poetry festival name KRITYA.